साहित्योत्सव 2016
festival of letters
15-20 February 2016

दैनिक समाचार बुलेटिन

बृहस्पतिवार, 18 फ़रवरी 2016

संवत्सर व्याख्यान

हम अपने आपको फिर से देखें, आँखों का चश्मा हटा कर : चंद्रशेखर धर्माधिकारी

साहित्य अकादेमी की महत्त्वपूर्ण संवत्सर व्याख्यान माला का आयोजन 17 फ़रवरी 2016 को साहित्य उत्सव के दौरान सायं 6 बजे किया गया। प्रख्यात न्यायविद् एवं गाँधीवादी विचारक न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी ने 'हम अपने आपको फिर से देखें, आँखों का चश्मा हटाकर' विषय पर अत्यंत विचारणीय व्याख्यान दिया। इसके पूर्व साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के श्रीनिवासराव ने श्री धर्माधिकारी का स्वागत करते हुए बताया कि साहित्य अकादेमी की कार्यकारी परिषद् ने 24 फ़रवरी 1985 को वार्षिक व्याख्यानमाला के आयोजन के लिए गठित समिति की सिफ़ारिशों को स्वीकार कर लिया, जिनके अंतर्गत साहित्यिक समालोचना से संबंधित व्याख्यानमाला को 'संवत्सर व्याख्यानमाला' की संज्ञा दी जाएगी। परिषद् द्वारा संवत्सर व्याख्यान के लिए एक नियमावली भी निर्धारित की गई, जिसके अंतर्गत प्रतिवर्ष अकादेमी-वर्षांत में ये व्याख्यान आयोजित किए जाएँगे। इस बात का भी निर्णय लिया गया कि संवत्सर व्याख्यान के अंतर्गत व्याख्यानकर्ता स्वयं किसी विषय का चयन कर दो या तीन व्याख्यान दे सकेंगे। यह भी निश्चित हुआ कि ये व्याख्यान व्याख्यानोपरांत प्रतिवर्ष पुस्तक रूप में प्रकाशित किए जाएँगे।

उन्होंने आगे कहा कि अकादेमी का पहला संवत्सर व्याख्यान सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन (अज्ञेय के नाम से विख्यात) द्वारा दिया गया था। इसी क्रम में जिन विद्वानों ने क्रमशः अपने विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किए हैं, उनके नाम हैं—अन्नदाशंकर राय, उमाशंकर जोशी, के. आर. श्रीनिवास आयंगर, के. शिवराम कारंत, विंदा कारंदीकार, आले अहमद सुरूर, विद्यानिवास मिश्र, नवकांत बरुआ, सीताकांत महापात्र, निर्मल वर्मा, सुभाष मुखोपाध्याय, एम. टी. वासुदेवन नायर, कुँवर नारायण, निरंजन भगत, विजय तेंदुलकर, सी. डी. नरसिम्हैया, गोविंद चंद्र पांडेय, के. अयप्प पणिक्कर, गिरीश कार्नाड, यू. आर. अनंतमूर्ति, मनोज दास, अमिताव घोष, कर्ण सिंह, ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, सुरजीत पातर, भालचंद्र नेमाड़े, ओ. एन. वी. कुरुप और आशीष नंदी। इनमें से बीस व्याख्यान पुस्तकाकार भी प्रकाशित किए गए हैं।

न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी ने अपने व्याख्यान में बताया कि उनपर गाँधी जी का प्रभाव क्यों है? उन्होंने बताया कि उन्होंने बचपन के दस साल गाँधी जी के सान्निध्य से अभिमंत्रित हुए वातावरण में याने वर्धा में बिताए। इसके कारण वे 'स्वदेशी' के संस्कार में पले हैं।

साहित्यिक और रसिक की विलक्षणता को उजागर करते हुए उन्होंने कहा- "सृष्टि तथा जीवन में से सिर्फ़ ज्ञान ही नहीं, बल्कि आनंद खोजने की अलौकिक शक्ति साहित्य तथा साहित्यकारों में होती है। यही असली रसिकता है। उसके लिए सृष्टि अपने सुख के लिए आरक्षित 'भोगभूमि' नहीं होती। वह तो उनके लिए मानवदेवता की उपासना के लिए प्राप्त हुई 'यज्ञभूमि' होती है। यह उनकी मंगलमय भावना होती है।"

उन्होंने समय एवं परिस्थिति में परिवर्तन के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्र देते हुए कहा - "हम संक्रमण-काल से गुज़र रहे हैं। पुराने मूल्य, पुरानी प्रतिष्ठाएँ जीर्ण होकर ढह रही हैं। नए मूल्य और नई प्रतिष्ठाओं की स्थापना करनी है। जड़-यंत्रवादी और प्रतिवर्तनवादियों (Behaviourists) ने मनुष्य को यंत्राधीन ओर बाह्य-तंत्राधीन मान लिया था। उस यांत्रिक और तांत्रिक मनु में से हम एक नए युग में प्रवेश कर रहे हैं। इस मूल्य-परिवर्तन की सिद्धि हममें से हर एक के प्रयत्न पर निर्भर है। इसमें अनेक व्यक्तियों को आत्माहुति देनी पड़ेगी। युद्ध में जो खेत होते हैं, वे भी विजयी होते हैं; बल्कि विजय का श्रेय असल में उन्हीं का होता है।"

सहकार्य और स्नेह-युग की स्थापना के बाबत कहा- "अधिकारों के संरक्षण की अपेक्षा सत्त्व का संरक्षण महत्त्वपूर्ण है। सत्त्व की चिंता रखने से स्वत्व का संरक्षण भी होता है। अखिल मानवता की एकता अधिकारवाद की अपेक्षा कर्तव्य-भावना के पवित्र अधिष्ठान पर की जाए, तभी प्रतियोगिता एवं असूया-मत्सर के स्थान पर सहकार्य और स्नेह का युग आरंभ होगा।"

उन्होंने नागरिकता को वर्गीकृत करते हुए कहा - "आज हमारे देश में चार तरह की नागरिकताएँ हैं : 1. सांप्रदायिक नागरिकता (Denomonational Citizenship) इसके बारे में विस्तार से कहने की ज़रूरत नहीं। 2. दूसरी है हाईफ़नेटेड नागरिकता (Hypheneted Citizenship) दो शब्द जोड़ने के लिए जो लकीर या रेखा लगाई जाती है, उसे हायफ़न कहते हैं। हम इसे सामासिक नागरिकता कहेंगे। तुम कौन हो?मैं महाराष्ट्रीय भारतीय हूँ, असमिया भारतीय, बंगाली भारतीय हूँ आदि। इसमें फिर गणित के सिद्धांतानुसार 'कॉमन फ़ैक्टर' यानी समान तत्त्व कैंसिल हो जाता है। और बचता है सिर्फ़ महाराष्ट्रीय, बंगाली, असमिया, तमिल आदि। 3. तीसरी है, गौण नागरिकता (Secondclass Citizenship) जिस प्रदेश में जो अल्पसंख्यक होगा, वह बहुसंख्यक लोगों की कृपा पर जीनेवाला गौण नागरिक होगा। 4. चौथी नागरिकता आंशिक नागरिकता (Fractional Citizenship) कहते हैं। आंशिक यानी जो पूर्ण नहीं माना जाता, वह। जैसे—स्त्री, अछूत, आदिवासी आदि। जिन्हें पूरा मानव या इनसान भी नहीं माना जाता। स्त्री तो आज भी अर्धांगिनी ही है।"

उन्होंने कहा - "पहले 'भारत छोड़ो' आंदोलन हुआ। बाद में प्रादेशिकता और भाषा आदि के नाम पर 'भारत तोड़ो' आंदोलन चला। अब 'भारत-जोड़ो' आंदोलन की आवश्यकता है, और यह 'पुण्यकर्म' सिर्फ़ साहित्यिक ही कर सकते हैं, यह मेरी भावना है और उनसे प्रार्थना भी है।"

इस विचारोत्तेजक व्याख्यान के अंत में इस व्याख्यानमाला पुस्तिका का लोकार्पण साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार, न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी और सचिव के. श्रीनिवासराव द्वारा किया गया। के. श्रीनिवासराव ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

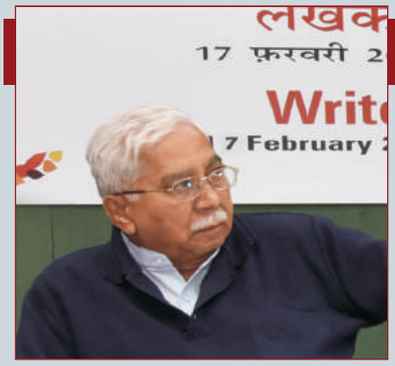

लेखक सम्मिलन की विशेष उक्तियाँ

"मैं प्रगतिवाद की ओर उन्मुख तो हुआ किन्तु अपने स्वभाव के अनुसार ही उसके साहित्यिक या राजनीतिक दल से सम्बद्ध नहीं हुआ। इसीलिए मैंने वस्तु और शिल्प दोनों ही क्षेत्रों में अपने को मुक्त रखा - किसी वर्जना या स्वीकृति के कठघरे में कैद नहीं हुआ। आज तक मैं समय के साथ तो चल रहा हूँ किंतु समय के खंडों को ले-लेकर जो वाद उछाले जाते रहे हैं और जिनके बैनर के नीचे आ-आकर लोगबाग इतिहास में अपने-अपने नाम दर्ज कराते रहे हैं, मैं उनसे नही जुड़ पाया। इसका खामियाजा मुझे भोगना पड़ा।" **- रामदरश मिश्र** (हिंदी)

"साहित्य समाज का प्रतिबिंब माना गया है और रचना प्रक्रिया परिस्थितियों, वातावरण एवं मानसिक चेतना से उपजती है। मैं विभाजन की बालिका हूँ। गुलाम भारत से स्वतंत्र भारत आने की जो कीमत अदा करनी पड़ी थी, उसके कारण जिन कष्टों, कठिनाइयों, एवं संघर्षों का जो सामना करना पड़ा, केवल इतना ही नहीं, सुनिश्चित, व्यवस्थित, संघर्ष-विहीन जीवन से निकल कर एक अनिश्चित अव्यवस्थित एवं संघर्ष के जिस गर्त में रहना पड़ा वही समस्त प्रभाव मेरी साहित्य रचना प्रक्रिया में उल्लिखित है।" - **माया राही** (सिंधी)

"आज मैं समाज को बहुत ज्ञानमय होते हुए भी, सुख-सुविधाओं से युक्त अथवा उनके लिए छटपटाते हुए विचित्र इच्छाओं सहित, तथा उनकी पूर्ति के लिए अच्छी-बुरी गतिविधियों के चक्रव्यूह में उलझा हुआ देखता हूँ। कामनाओं के अनोखे रंग-ढंग, रिश्तों और परिस्थितयों में उलझा हुआ ताना-बाना चलचित्र की भाँति मेरे भीतर घूमता रहता है। विकटतम परिस्थितयों में फँसे हुए व्यक्ति की पुकार मेरे मन में निरंतर गुत्थमगुत्था होती रहती है। यही कशमकश मुझे वृत्तांत गड़ने की ओर ले जाती है।" - **जसविंदर सिंह** (पंजाबी)

"शब्द की गहन व्याख्या को समझाने के लिए बहुत पढ़ा। जो समझ नहीं आया, उसे बड़ों से सीखा। तरुणावस्था तक पहुँचा तो समझ आया कि 'शब्द' में बहुत शक्ति है। ये सत्ताओं को बना सकता है और विद्रोही स्वरूप अख्तियार कर ले तो इनको उखाड़ भी सकता है। इंसानी रिश्तों को बनाने और उनको संवेदनात्मक स्तर पर मजबूत बनाने का जरिया भी यही शब्द हैं।" - **मधु आचार्य 'आशावादी'** (राजस्थानी)

"मधुर गीतों में पुरानी स्मृतियों, घरेलू द्वंद्वों तथा दुखद विचारों का संघर्ष अच्छी तरह से चित्रित किया गया है। यद्यपि बहुआयामी तथा विविध सोच ने भावनाओं की अभिव्यिक्ति में सकरात्मक भूमिका निभाई है। कविताओं की रचना प्रक्रिया में कई तरह की पेचीदगियाँ हैं, जो आज तक विद्यमान हैं।" **- ध्यान सिंह** (डोगरी)

"मेरे पात्र मेरी स्मृतियों के झरोखों से निकलते हैं। वह वर्तमान में चलते हैं, अतीत में भी जाते हैं, उनका सामना शहर की कठिनाइयों से भी होता है, वे ईंट-पत्थर से बनी आसमान छूती इमारतों से परेशान भी हैं, जिनके होने से वह शुद्ध वायु नहीं ले सकते, किंतु उनके पात्र इन स्थितियों को देखकर घबराते नहीं वरन् उन्हें सुलझाने की चेष्टा करते हैं।" - **कुल सैकिया** (असमिया)

साहित्योत्सव 2016
festival of letters
15-20 February 2016

आज के कार्यक्रम

आमने-सामने : पुरस्कृत लेखकों की प्रख्यात लेखकों/विद्वानों से बातचीत, पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन
पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन, पूर्वाह्न 10.30 बजे, रवींद्र भवन लॉन
राष्ट्रीय संगोष्ठी : 'गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव' का उद्घाटन 11.00 बजे, अकादेमी सभागार
सांस्कृतिक कार्यक्रम : निज़ामी बंधुओं द्वारा क़व्वाली की प्रस्तुति, सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

युवा साहिती : नई फ़सल

साहित्योत्सव के दौरान आज युवा साहिती कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें भारत की 24 भाषाओं के युवा रचनाकारों को आमंत्रित किया गया था। उद्घाटन सत्र में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा युवा रचनाकारों के लिए संचालित की जाने वाली विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। अंग्रेज़ी की प्रख्यात लेखिका प्रो. सुकृता पाल कुमार ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि हर शब्द लेखन में तराश-तराश कर व्यक्त किया जाता है और रचना में शब्दों का तो महत्त्व होता ही है लेकिन मौन की भूमिका और महत्त्वपूर्ण होती है। उन्होंने प्रख्यात नाटककार सैमुअल बैकेट सहित कुछ और नोबेल पुरस्कृत रचनाकारों के साथ के अपने संस्मरण साझा करते हुए रचनात्मकता को व्याख्यायित किया। अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि रचनात्मकता हमेशा नई होती है और आज की युवा पीढ़ी सौभाग्यशाली है। उन्होंने कहा कि अपनी मातृभाषा में ही सच्ची रचना हो सकती है। कार्यक्रम में बिजय शंकर बर्मन (असमिया), अशोक अंबर (डोगरी), सेजल शॉह (गुजराती), अर्जुन गोलासांगी (कन्नड), अरिबम रिमीता देवी (मणिपुरी), मर्सी मार्गेट (तेलुगु), मुईद रशीदी (उर्दू), तथा मिहिर चित्रे (अंग्रेज़ी) ने अपनी कविताओं/नज़्मों एवं ग़ज़लों का पाठ किया। इस अवसर पर नवोदय शृंखला के अंतर्गत अकादेमी द्वारा प्रकाशित तीन युवा रचनाकारों की कविता पुस्तकों (*परिवाहः* - बलराम शुक्ल, *सितुही भर समय* - प्रमोद कुमार तिवारी, *पीली रोशनी से भरा काग़ज़* - विशाल श्रीवास्तव) का लोकार्पण भी किया गया।

'मैं क्यों लिखता/लिखती हूँ' सत्र की अध्यक्षता बाङ्ला के सुपरिचित रचनाकार अंशुमन कर ने की। इस सत्र में राजस्थानी भाषा के गौरी शंकर नेमीवाल, हिंदी की कथाकार इंदिरा दांगी और मलयाळम् के रचनाकार वीरन कुट्टी ने अपने विचार व्यक्त किए। द्वितीय सत्र में बाङ्ला भाषा के विनोद घोषाल, कोंकणी भाषा के नरेश नाईक, मराठी भाषा के प्रशांत बागड़ तथा ओड़िया भाषा के क्षेत्रवासी नायक ने अपनी कहानियों का पाठ किया। तृतीय सत्र में कश्मीरी भाषा के महताब मंज़ूर, पंजाबी के बलकार औलख, संताली के सीमल टुडु, मैथिली के नवनीत कुमार झा, नेपाली के रणजीत गुरुंग, तमिळ की वनीता, संस्कृत के नारायण दाश और सिंधी की संगीता बापुली ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने की और संचालन अकादेमी के हिंदी संपादक कुमार अनुपम ने किया।

साहित्योत्सव 2016 कार्यक्रम

19 फ़रवरी 2016 (शुक्रवार)

भारत की अलिखित भाषाओं पर परिसंवाद : पूर्वाह्न 11.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन
राष्ट्रीय संगोष्ठी : 'गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव', पूर्वाह्न 10.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार
सांस्कृतिक कार्यक्रम : *ओथेलो* की 'कथकली' शैली में प्रस्तुति, सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

20 फ़रवरी 2016 (शनिवार)

संगोष्ठी : 'अनुवाद चेतना और भारत में भारतीय साहित्यिक परंपराएँ', पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन
राष्ट्रीय संगोष्ठी : 'गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव', पूर्वाह्न 10.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार
आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ, पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन
सांस्कृतिक कार्यक्रम : 'चेराव' (बाँस नृत्य) की प्रस्तुति, सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

पुस्तक प्रदर्शनी : प्रतिदिन पूर्वाह्न 10.00 बजे से सायं 7.00 बजे तक, रवींद्र भवन लॉन

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग (मंडी हाउस मेट्रो स्टेशन के पास), नई दिल्ली-110 001
फोन : +91-011-23386626 / 27 / 28
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in **वेब-साइट :** www.sahitya-akademi.gov.in